इन्टर-II [redacted]
(L.L.2) मैथिली

प्रो० संजीत कुमार राम
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar

मुसरीक्षा

मुसरीक्षा कथाकात्मक कथा

मुंसरीक्षा तंत्रनाथ झाक प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कविता थिक। एहिमे कथाक माध्यमसँ मुसरीक्षा नामक पण्डितक आचार-विचार एवं संकीर्णता के सरस शब्दमे व्यक्त कएल गेल अछि।

कवि कहैत छथि जे बहुतो दिन पहिने मिथिला मे मुसरीक्षा नामक एक पंडित छलाह। सब दिन अन्हरोखे उठिकऽ पूजा पाठ मे लागि जाइत छलाह। पूजा करैत-करैत दुपहरीया भऽ जाइत छलै।

माघक मास रहैक। स्नान

रहल छलाह। कि गाँती बन्हने एकटा उद्दण्ड छौंड़ा आयल। ओ एकटा कुकुर कें सूतल देखलक। ओकरा रहके मे फुरलै ओ पण्डितजी लग पैर दाबिकऽ गेल आ हुनक जलपात्र लुका छुपे सँ सूतल कुकुरक देह पर पानि ढारि देलकै। पानि ढारैत कुकुर फुरफुरा कऽ उठि गेल आ देह तनैत अपन शरीरक पानि झारऽ लागल। एम्हर छौंड़ा लोटा पटके न ओ-दु-ग्यारह भऽ गेल। कुकुर देहक पानि पण्डित जी कें पड़लनि। ओ जागि उठल। हुनि उठि कऽ ओ पोखरि मे जा कतोक डुब देलनि, गाबिस माटि पोखरिक अलाह पानि सँ निकालि कऽ पूरा देह मललनि। तैओ मन प्रसन्न नहि भेलनि। तखनहि की करितथि निजले देहे - निजके कपड़ मे अँगना आबि गेला।

"कखनो, दुख देलनि तन मललन्हि
तैओ मन प्रसन्न नहि भेल,
शीतल वसन्त पानि कर तप-तप
मुमतीस्ता घुरि आँगन गेल।"

गाम पाई आबि ओ समता स्वेता अपन पत्नीकेँ कहलन्हि। ओ कहलन्हि जेँ हम प्रायश्चित नहि कए सकब तँ धर्मशास्त्रमे स्पष्ट लिखल छैक, जे एहन ब्राह्मण थिक चाण्डाल। ओना शरीर पुनः पवित्र होयत तहि लेल ओनो उपाय बताउ। निष्कर्ष भेल जे कहुँ गंगा स्नान कए आबि पतित उद्धार होयत। - "गंगा निकाली कलिक अघ-हारिणी

घोर पाप परसहि दुर जाय
पातक विषम नष्ट हो सत्वर
जाहिना जल-बिच नोन बिलाय।

मुमतीसाक गाम छै बिवाहोक एकटा करएब लोटा, कराही, धोती आ एकटा सोटा।

लऽ विदा भेल। दु-ओत पग तीनकोस चललथि तँ साँझ पड़ि गेलनि। राति बितनाइ एकटा समस्या भऽ गेलनि। ताहू पर भूख बड़ जोर लागि गेल रहलनि। किछु दूर आओर चलबाक बाद देखलन्हि जे बाधमे अधिआ बथान छैन आछि। पुजारी झा ओकरा लग गेला आ अपन परिचय देलथिन। ओ सभ पंडितजी कें सेवा सत्कार करऽ लागलथि। पुजारी झा कहलथि गप-सप बाद मे पहिने किछु भोजन कराऊ। दुहैत रपवल्ला लोकनि पुजारी झा भोजन पड़ बैसलाह। पुरैनिक पात राखल गेल जाहि पर चूड़ा, दूध खेलनि। खाय-पीबिकऽ पंडितजी उठलाह आ तेसे धूर तर आगाँ गेलाह। जखन-किछु ठार भेला, मन प्रफुल्ल भेलनि तँ खेनाई के प्रशंसा कइलाह-

“आखड़ा तोहर होअओ अखण्ड
एतबोलें जे भूखल रहा
तेकाले करि ओ परचण्ड।”

राउत आनल पंडितजी हमर अपनाक
दुख कि अपनो ठालहीक रताह आँखि
कहाँ पेलहुँ ई तँ दोसर बेर घड़ल छालैह
बिक) पाईल तँ पिलिआ-पाति गेल
छल। ओ रहैत तँ खतम भै नरहल्थी।
एते मोत भेल रहैत। ई सुनि पंडितजीक
हियामे कविक शब्दमे देखल जाय -

“ निश्चल आँखि निड़ाहि आगि मुह
जोराहि अएँ नाहि उठल फाने,
एक ओंकार मुह नकिलाहि रहि गेल
की केल कओ सकल नहि जानि।”

जँ-जँ लोक पुछौनहि कुटलीखा हँ तँ
तँ हुनक मुँह आर बिधुआयल जानि।

(समाप्त